



क्रमांक 40

Munne Ki Lash (Hindi)

मुन्ने की लाश

(ग़ौसे आ'ज़म رحمة اللہ تعالیٰ علیہ की हिकायात)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, वानिये दा'वते इस्लामी, हुज़ुरते अस्लामा मौलाना अबू बिलास

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़दिरि २-जवी دوست کا نام مبارک

مکتبۃ الدین
(مکتبۃ اسلامی)

SC1268

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज्र : शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना
 अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये
 ان شاء الله عزوجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
 عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ हम पर इल्म व हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी
 रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुजुर्गी वाले। (المستطرف ج 1 ص 40 دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे गुमे मदीना

व बकीअ

व मरिफ़रत



13 शब्बालुल मुकर्रम 1428 हि.

(मुन्ने की लाश)

येह रिसाला (मुन्ने की लाश)

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना
 अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने उर्दू ज़बान में तहरीर
 फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर
 पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी
 पाएँ तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब या ई-मैल) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 آمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

मुन्ने की लाश

शैतान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (18 सफ़हत्त)

मुकम्मल पढ़ लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ आप के दिल में गौसे

आ'ज़म عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَمِ की महबबत मज़ीद बढ़ जाएगी ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

नबिय्ये मुअज़्ज़म, रसूले मोहतरम, सुल्ताने ज़ी हशम, सरापा जूदो करम, हबीबे मुकर्रम, महबूबे रब्बे अकरम
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : मुसल्मान जब तक मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहता है फिरिश्ते उस पर रहमतें भेजते रहते हैं अब बन्दे की मरज़ी है कम पढ़े या ज़ियादा ।

(ابن ماجه ج ١ ص ٤٩٠ حديث ٩٠٧ دارالمعرفة بيروت)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

ख़ानकाह में एक बा पर्दा ख़ातून अपने मुन्ने की लाश चादर में लिपटाए, सीने से चिमटाए ज़ारो क़ितार रो रही थी । इतने में एक “म-दनी मुन्ना” दौड़ता हुवा आता है और हम-दर्दाना लहजे में उस ख़ातून से रोने का सबब दरयाफ़्त करता है । वोह रोते हुए कहती है : बेता !

फरमाने मुखफा على الله تعالى علين واليه وسلم : जो शख्स मुझ पर दुरूद पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

मेरा शोहर अपने लख्ते जिगर के दीदार की हसरत लिये दुन्या से रुख़सत हो गया है, येह बच्चा उस वक़्त पेट में था और अब येही अपने बाप की निशानी और मेरी जिन्दगानी का सरमाया था, येह बीमार हो गया, मैं इसे इसी ख़ानकाह में दम करवाने ला रही थी कि रास्ते में इस ने दम तोड़ दिया है, मैं फिर भी बड़ी उम्मीद ले कर यहां हाज़िर हो गई कि इस ख़ानकाह वाले बुजुर्ग की विलायत की हर तरफ़ धूम है और इन की निगाहे करम से अब भी बहुत कुछ हो सकता है मगर वोह मुझे सब्र की तल्कीन कर के अन्दर तशरीफ़ ले जा चुके हैं। येह कह कर वोह ख़ातून फिर रोने लगी। “म-दनी मुन्ने” का दिल पिघल गया और उस की रहमत भरी ज़बान पर येह अल्फ़ज़ खेल्ने लगे : “मोह-त-रमा ! आप का मुन्ना मरा हुवा नहीं बल्कि जिन्दा है ! देखो तो सही ! वोह ह-र-कत कर रहा है।” दुखियारी मां ने बेताबी के साथ अपने “मुन्ने की लाश” पर से कपड़ा उठा कर देखा तो वोह सचमुच जिन्दा था और हाथ पैर हिला कर खेल रहा था। इतने में ख़ानकाह वाले बुजुर्ग अन्दर से वापस तशरीफ़ लाए। बच्चे को जिन्दा देख कर सारी बात समझ गए और लाठी उठा कर येह कहते हुए “म-दनी मुन्ने” की तरफ़ लपके कि तूने अभी से तक्दीरे खुदा वन्दी के सर बस्ता राज़ खोलने शुरूअ कर दिये हैं ! म-दनी मुन्ना वहां से भाग खड़ा हुवा और वोह बुजुर्ग उस के पीछे दौड़ने लगे, “म-दनी मुन्ना” यकायक क़ब्रिस्तान की तरफ़ मुड़ा और बुलन्द आवाज़ से पुकारने लगा : ऐ क़ब्र वालो ! मुझे बचाओ ! तेज़ी से लपक्ते हुए बुजुर्ग अचानक टिठक कर रुक गए क्यूं कि क़ब्रिस्तान से तीन सौ³⁰⁰ मुर्दे उठ कर उसी “म-दनी मुन्ने” की ढाल बन चुके थे और वोह “म-दनी मुन्ना” दूर खड़ा अपना चांद सा चेहरा चमकाता

फरमावे मुखफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बद बख्त हो गया । (अिन)

मुस्करा रहा था । उन बुजुर्ग ने बड़ी हसरत के साथ “म-दनी मुन्ने” की तरफ देखते हुए कहा : बेटा ! हम तेरे मर्तबे को नहीं पहुंच सकते, इस लिये तेरी मरजी के आगे अपना सरे तस्लीम ख्रम करते हैं ।

(مُلَخَّصٌ اَزَ الْحَقَائِقِ فِي الْحَرَائِقِ ج ۱ ص ۴۲ او غیرہ مکتبۃ اویسر رضویہ، بہاولپور پاکستان)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप जानते हैं वोह “म-दनी मुन्ना” कौन था ? उस म-दनी मुन्ने का नाम अब्दुल कादिर था और आगे चल कर वोह गौसुल आ'जम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَكْرَم के लकब से मशहूर हुए ।

क्यूं न कासिम हो कि तू इब्ने अबिल कासिम है

क्यूं न कादिर हो कि मुख्तार है बाबा तेरा

(हदाइके बख्शाश शरीफ)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

बचपन शरीफ की सात करामात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे गौसुल आ'जम

رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ अभी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ 1 ﴿1﴾ आप मादर जाद वली थे ।

अपनी मां के पेट में थे और मां को जब छींक आती और इस पर

जब वोह الْحَمْدُ لِلَّهِ कहतीं तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ पेट ही में जवाबन

رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ यकुम र- 2 ﴿2﴾ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ कहते (الحقائق في الحرائق ص 139)।

मजानुल मुबारक बरोज पीर सुब्हे सादिक के वक्त दुन्या में

जल्वा गर हुए उस वक्त होंट आहिस्ता आहिस्ता ह-र-कत कर रहे

थे और अल्लाह अल्लाह की आवाज आ रही थी (يَا) 3 ﴿3﴾ जिस

दिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की विलादत हुई उस दिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

के दियारे विलादत जीलान शरीफ में ग्यारह सो¹¹⁰⁰ बच्चे पैदा

फरमाते मुस्ताफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझे पर दस मरतबा सुब्द और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (شُعَبُ الرِّوَايَةِ)

हुए वोह सब के सब लड़के थे और सब वलिय्युल्लाह बने (تَفْرِیحُ الْخَاطِرِ ص १०) ﴿4﴾ गौसुल आ'जम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَكْرَم ने पैदा होते ही रोज़ा रख लिया और जब सूरज गुरुब हुवा उस वक्त मां का दूध नोश फ़रमाया । सारा र-मजानुल मुबारक आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का येही मा'मूल रहा (بَهْجَةُ الْأَسْرَارِ ص १७२) ﴿5﴾ पांच⁵ बरस की उम्र में जब पहली बार بِسْمِ اللهِ पढ़ने की रस्म के लिये किसी बुजुर्ग के पास बैठे तो اَعُوذُ और بِسْمِ اللهِ पढ़ कर सूरए फ़ातिहा और اَلْم से ले कर अद्वारह पारे पढ़ कर सुना दिये । उन बुजुर्ग ने कहा : बेटे ! और पढ़िये । फ़रमाया : बस मुझे इतना ही याद है क्यूं कि मेरी मां को भी इतना ही याद था, जब मैं अपनी मां के पेट में था उस वक्त वोह पढ़ा करती थीं, मैं ने सुन कर याद कर लिया था (الْمُتَّقِنُ فِي الْمَرَاتِقِ ص १४०) ﴿6﴾ जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ लड़क-पन में खेलने का इरादा फ़रमाते, ग़ैब से आवाज़ आती : ऐ अब्दुल क़ादिर ! हम ने तुझे खेलने के वासिते नहीं पैदा किया (الْبَيْضُ) ﴿7﴾ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ मद्रसे में तशरीफ़ ले जाते तो आवाज़ आती : “अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली को जगह दे दो ।” (بَهْجَةُ الْأَسْرَارِ ص ४८)

न-बवी मीह अ-लवी फ़स्ल बतूली गुलशन

ह-सनी फूल हुसैनी है महक्ना तेरा

(हदाइके बख़्शिश शरीफ)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

करामत की ता'रीफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'ज अवक़ात आदमी करामाते औलिया के मुआ-मले में शैतान के वस्वसे में आ कर

फ़रमाने मुस्ताफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

करामात को अक्ल के तराजू में तोलने लगता है और यूँ गुमराह हो जाता है। याद रखिये ! **करामत** कहते ही उस खिर्के आदत बात को हैं जो आदतन मुहाल या'नी ज़ाहिरी अस्बाब के ज़रीए उस का सुदूर ना मुम्किन हो मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अता से औलियाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللهُ تَعَالَى से ऐसी बातें बसा अवक़ात सादिर हो जाती हैं। **नबी** से क़ब्ल अज़ ए'लाने नुबुव्वत ऐसी चीज़ें ज़ाहिर हों तो उन को **इरहास** कहते हैं और ए'लाने नुबुव्वत के बा'द सादिर हों तो **मो'जिजा** कहते हैं। आम मुअमिनीन से अगर ऐसी चीज़ें ज़ाहिर हों तो उसे **मऊनत** और वली से ज़ाहिर हों तो **करामत** कहते हैं। नीज़ काफ़िर या फ़ासिक से कोई खिर्के आदत ज़ाहिर हो तो उसे **इस्तिद्राज** कहते हैं। (मुलख़ख़स अज़ : बहारे शरीअत, जि. 1, स. 56, 58, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

अक्ल को तन्कीद से फुरसत नहीं

इश्क़ पर आ'माल की बुन्याद रख

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ عَلَى مُحَمَّدٍ

गौसे आ'जम ने मिर्गी को भगा दिया

एक मर्तबा बारगाहे गौसिय्यत मआब में हाज़िर हो कर एक शख़्स ने अर्ज़ की : अलीजाह ! मेरी जौजा को मिर्गी हो गई, हुजूरे गौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “इस के कान में कह दो गौसे आ'जम का हुक्म है कि बग़दाद से निकल जा।” चुनान्चे उसी वक़्त वोह अच्छी हो गई।

(مُلَخَّصٌ از بهجة الاسرار للشطنوفى ص ۱۴۰، ۱۴۱، ۱۴۲، ۱۴۳، ۱۴۴، ۱۴۵، ۱۴۶، ۱۴۷، ۱۴۸، ۱۴۹، ۱۵۰، ۱۵۱، ۱۵۲، ۱۵۳، ۱۵۴، ۱۵۵، ۱۵۶، ۱۵۷، ۱۵۸، ۱۵۹، ۱۶۰، ۱۶۱، ۱۶۲، ۱۶۳، ۱۶۴، ۱۶۵، ۱۶۶، ۱۶۷، ۱۶۸، ۱۶۹، ۱۷۰، ۱۷۱، ۱۷۲، ۱۷۳، ۱۷۴، ۱۷۵، ۱۷۶، ۱۷۷، ۱۷۸، ۱۷۹، ۱۸۰، ۱۸۱، ۱۸۲، ۱۸۳، ۱۸۴، ۱۸۵، ۱۸۶، ۱۸۷، ۱۸۸، ۱۸۹، ۱۹۰، ۱۹۱، ۱۹۲، ۱۹۳، ۱۹۴، ۱۹۵، ۱۹۶، ۱۹۷، ۱۹۸، ۱۹۹، ۲۰۰، ۲۰۱، ۲۰۲، ۲۰۳، ۲۰۴، ۲۰۵، ۲۰۶، ۲۰۷، ۲۰۸، ۲۰۹، ۲۱۰، ۲۱۱، ۲۱۲، ۲۱۳، ۲۱۴، ۲۱۵، ۲۱۶، ۲۱۷، ۲۱۸، ۲۱۹، ۲۲۰، ۲۲۱، ۲۲۲، ۲۲۳، ۲۲۴، ۲۲۵، ۲۲۶، ۲۲۷، ۲۲۸، ۲۲۹، ۲۳۰، ۲۳۱، ۲۳۲، ۲۳۳، ۲۳۴، ۲۳۵، ۲۳۶، ۲۳۷، ۲۳۸، ۲۳۹، ۲۴۰، ۲۴۱، ۲۴۲، ۲۴۳، ۲۴۴، ۲۴۵، ۲۴۶، ۲۴۷، ۲۴۸، ۲۴۹، ۲۵۰، ۲۵۱، ۲۵۲، ۲۵۳، ۲۵۴، ۲۵۵، ۲۵۶، ۲۵۷، ۲۵۸، ۲۵۹، ۲۶۰، ۲۶۱، ۲۶۲، ۲۶۳، ۲۶۴، ۲۶۵، ۲۶۶، ۲۶۷، ۲۶۸، ۲۶۹، ۲۷۰، ۲۷۱، ۲۷۲، ۲۷۳، ۲۷۴، ۲۷۵، ۲۷۶، ۲۷۷، ۲۷۸، ۲۷۹، ۲۸۰، ۲۸۱، ۲۸۲، ۲۸۳، ۲۸۴، ۲۸۵، ۲۸۶، ۲۸۷، ۲۸۸، ۲۸۹، ۲۹۰، ۲۹۱، ۲۹۲، ۲۹۳، ۲۹۴، ۲۹۵، ۲۹۶، ۲۹۷، ۲۹۸، ۲۹۹، ۳۰۰، ۳۰۱، ۳۰۲، ۳۰۳، ۳۰۴، ۳۰۵، ۳۰۶، ۳۰۷، ۳۰۸، ۳۰۹، ۳۱۰، ۳۱۱، ۳۱۲، ۳۱۳، ۳۱۴، ۳۱۵، ۳۱۶، ۳۱۷، ۳۱۸، ۳۱۹، ۳۲۰، ۳۲۱، ۳۲۲، ۳۲۳، ۳۲۴، ۳۲۵، ۳۲۶، ۳۲۷، ۳۲۸، ۳۲۹، ۳۳۰، ۳۳۱، ۳۳۲، ۳۳۳، ۳۳۴، ۳۳۵، ۳۳۶، ۳۳۷، ۳۳۸، ۳۳۹، ۳۴۰، ۳۴۱، ۳۴۲، ۳۴۳، ۳۴۴، ۳۴۵، ۳۴۶، ۳۴۷، ۳۴۸، ۳۴۹، ۳۵۰، ۳۵۱، ۳۵۲، ۳۵۳، ۳۵۴، ۳۵۵، ۳۵۶، ۳۵۷، ۳۵۸، ۳۵۹، ۳۶۰، ۳۶۱، ۳۶۲، ۳۶۳، ۳۶۴، ۳۶۵، ۳۶۶، ۳۶۷، ۳۶۸، ۳۶۹، ۳۷۰، ۳۷۱، ۳۷۲، ۳۷۳، ۳۷۴، ۳۷۵، ۳۷۶، ۳۷۷، ۳۷۸، ۳۷۹، ۳۸۰، ۳۸۱، ۳۸۲، ۳۸۳، ۳۸۴، ۳۸۵، ۳۸۶، ۳۸۷، ۳۸۸، ۳۸۹، ۳۹۰، ۳۹۱، ۳۹۲، ۳۹۳، ۳۹۴، ۳۹۵، ۳۹۶، ۳۹۷، ۳۹۸، ۳۹۹، ۴۰०، ۴०१، ۴०२، ۴०३، ۴०४، ۴०५، ۴०६، ۴०७، ۴०८، ۴०९، ۴१०، ۴११، ۴१२، ۴१३، ۴१४، ۴१५، ۴१६، ۴१७، ۴१८، ۴१९، ۴२०، ۴२१، ۴२२، ۴२३، ۴२४، ۴२५، ۴२६، ۴२७، ۴२८، ۴२९، ۴३०، ۴३१، ۴३२، ۴३३، ۴३४، ۴३५، ۴३६، ۴३७، ۴३८، ۴३९، ۴४०، ۴४१، ۴४२، ۴४३، ۴४४، ۴४५، ۴४६، ۴४७، ۴४८، ۴४९، ۴५०، ۴५१، ۴५२، ۴५३، ۴५४، ۴५५، ۴५६، ۴५७، ۴५८، ۴५९، ۴६०، ۴६१، ۴६२، ۴६३، ۴६४، ۴६५، ۴६६، ۴६७، ۴६८، ۴६९، ۴७०، ۴७१، ۴७२، ۴७३، ۴७४، ۴७५، ۴७६، ۴७७، ۴७८، ۴७९، ۴८०، ۴८१، ۴८२، ۴८३، ۴८४، ۴८५، ۴८६، ۴८७، ۴८८، ۴८९، ۴९०، ۴९१، ۴९२، ۴९३، ۴९४، ۴९५، ۴९६، ۴९७، ۴९८، ۴९९، ۵००، ۵०१، ۵०२، ۵०३، ۵०४، ۵०५، ۵०६، ۵०७، ۵०८، ۵०९، ۵१०، ۵११، ۵१२، ۵१३، ۵१४، ۵१५، ۵१६، ۵१७، ۵१८، ۵१९، ۵२०، ۵२१، ۵२२، ۵२३، ۵२४، ۵२५، ۵२६، ۵२७، ۵२८، ۵२९، ۵३०، ۵३१، ۵३२، ۵३३، ۵३४، ۵३५، ۵३६، ۵३७، ۵३८، ۵३९، ५४०، ५४१، ५४२، ५४३، ५४४، ५४५، ५४६، ५४७، ५४८، ५४९، ५५०، ५५१، ५५२، ५५३، ५५४، ५५५، ५५६، ५५७، ५५८، ५५९، ५६०، ५६१، ५६२، ५६३، ५६४، ५६५، ५६६، ५६७، ५६८، ५६९، ५७०، ५७१، ५७२، ५७३، ५७४، ५७५، ५७६، ५७७، ५७८، ५७९، ५८०، ५८१، ५८२، ५८३، ५८४، ५८५، ५८६، ५८७، ५८८، ५८९، ५९०، ५९१، ५९२، ५९३، ५९४، ५९५، ५९६، ५९७، ५९८، ५९९، ६००، ६०१، ६०२، ६०३، ६०४، ६०५، ६०६، ६०७، ६०८، ६०९، ६१०، ६११، ६१२، ६१३، ६१४، ६१५، ६१६، ६१७، ६१८، ६१९، ६२०، ६२१، ६२२، ६२३، ६२४، ६२५، ६२६، ६२७، ६२८، ६२९، ६३०، ६३१، ६३२، ६३३، ६३४، ६३५، ६३६، ६३७، ६३८، ६३९، ६४०، ६४१، ६४२، ६४३، ६४४، ६४५، ६४६، ६४७، ६४८، ६४९، ६५०، ६५१، ६५२، ६५३، ६५४، ६५५، ६५६، ६५७، ६५८، ६५९، ६६०، ६६१، ६६२، ६६३، ६६४، ६६५، ६६६، ६६७، ६६८، ६६९، ६७०، ६७१، ६७२، ६७३، ६७४، ६७५، ६७६، ६७७، ६७८، ६७९، ६८०، ६८१، ६८२، ६८३، ६८४، ६८५، ६८६، ६८७، ६८८، ६८९، ६९०، ६९१، ६९२، ६९३، ६९४، ६९५، ६९६، ६९७، ६९८، ६९९، ७००، ७०१، ७०२، ७०३، ७०४، ७०५، ७०६، ७०७، ७०८، ७०९، ७१०، ७११، ७१२، ७१३، ७१४، ७१५، ७१६، ७१७، ७१८، ७१९، ७२०، ७२१، ७२२، ७२३، ७२४، ७२५، ७२६، ७२७، ७२८، ७२९، ७३०، ७३१، ७३२، ७३३، ७३४، ७३५، ७३६، ७३७، ७३८، ७३९، ७४०، ७४१، ७४२، ७४३، ७४४، ७४५، ७४६، ७४७، ७४८، ७४९، ७५०، ७५१، ७५२، ७५३، ७५४، ७५५، ७५६، ७५७، ७५८، ७५९، ७६०، ७६१، ७६२، ७६३، ७६४، ७६५، ७६६، ७६७، ७६८، ७६९، ७७०، ७७१، ७७२، ७७३، ७७४، ७७५، ७७६، ७७७، ७७८، ७७९، ७८०، ७८१، ७८२، ७८३، ७८४، ७८५، ७८६، ७८७، ७८८، ७८९، ७९०، ७९१، ७९२، ७९३، ७९४، ७९५، ७९६، ७९७، ७९८، ७९९، ८००، ८०१، ८०२، ८०३، ८०४، ८०५، ८०६، ८०७، ८०८، ८०९، ८१०، ८११، ८१२، ८१३، ८१४، ८१५، ८१६، ८१७، ८१८، ८१९، ८२०، ८२१، ८२२، ८२३، ८२४، ८२५، ८२६، ८२७، ८२८، ८२९، ८३०، ८३१، ८३२، ८३३، ८३४، ८३५، ८३६، ८३७، ८३८، ८३९، ८४०، ८४१، ८४२، ८४३، ८४४، ८४५، ८४६، ८४७، ८४८، ८४९، ८५०، ८५१، ८५२، ८५३، ८५४، ८५५، ८५६، ८५७، ८५८، ८५९، ८६०، ८६१، ८६२، ८६३، ८६४، ८६५، ८६६، ८६७، ८६८، ८६९، ८७०، ८७१، ८७२، ८७३، ८७४، ८७५، ८७६، ८७७، ८७८، ८७९، ८८०، ८८१، ८८२، ८८३، ८८४، ८८५، ८८६، ८८७، ८८८، ८८९، ८९०، ८९१، ८९२، ८९३، ८९४، ८९५، ८९६، ८९७، ८९८، ८९९، ९००، ९०१، ९०२، ९०३، ९०४، ९०५، ९०६، ९०७، ९०८، ९०९، ९१०، ९११، ९१२، ९१३، ९१४، ९१५، ९१६، ९१७، ९१८، ९१९، ९२०، ९२१، ९२२، ९२३، ९२४، ९२५، ९२६، ९२७، ९२८، ९२९، ९३०، ९३१، ९३२، ९३३، ९३४، ९३५، ९३६، ९३७، ९३८، ९३९، ९४०، ९४१، ९४२، ९४३، ९४४، ९४५، ९४६، ९४७، ९४८، ९४९، ९५०، ९५१، ९५२، ९५३، ९५४، ९५५، ९५६، ९५७، ९५८، ९५९، ९६०، ९६१، ९६२، ९६३، ९६४، ९६५، ९६६، ९६७، ९६८، ९६९، ९७०، ९७१، ९७२، ९७३، ९७४، ९७५، ९७६، ९७७، ९७८، ९७९، ९८०، ९८१، ९८२، ९८३، ९८४، ९८५، ९८६، ९८७، ९८८، ९८९، ९९०، ९९१، ९९२، ९९३، ९९४، ९९५، ९९६، ९९७، ९९८، ९९९، १०००)

फरमाते मुस्ताफा ﷺ : जो मुझ पर राज़ जुमुआ दुरूद शराफ़ पढ़ेगा मे कियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (त्रामाल)

मिर्गी शरीर जिन्न है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : (मिर्गी) बहुत ख़बीस बला है और इसी को उम्मुस्सिब्यान कहते हैं, (बच्चों की एक बीमारी जिस से आ'जा में झटके लगते हैं) अगर बच्चों को हो, वरना सर-अ (मिर्गी)। तजरिबे से साबित हुवा है कि अगर पच्चीस²⁵ बरस के अन्दर अन्दर होगी तो उम्मीद है कि जाती रहे और अगर पच्चीस²⁵ बरस के बा'द या पच्चीस²⁵ बरस वाले को हुई तो अब न जाएगी। हां किसी वली की करामत या ता'वीज़ से जाती रहे तो येह अम्र आख़र (या'नी और बात) है। येह (या'नी मिर्गी) फ़िल हकीकत एक (शरीर जिन्न या'नी) शैतान है जो इन्सान को सताता है।

बच्चों को मिर्गी से बचाने का नुस्खा

बच्चा पैदा होने के बा'द जो अज़ान में देर की जाती है, इस से अक्सर येह (या'नी मिर्गी का) मरज़ हो जाता है और अगर बच्चा पैदा होने के बा'द पहला काम येह किया जाए कि नहला कर अज़ान व इक़ामत बच्चे के कान में कह दी जाए तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** उम्र भर (मिर्गी से) महफूज़ी है।

(मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत, स. 417, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची)

रज़ा के सामने की ताब किस में

फलक वार इस पे तेरा ज़िल है या ग़ौस

(हदाइके बख़्शिश शरीफ़)

صَلِّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ ! صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب !

फ़रमावे मुश्फा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है । (रिवायत)

गौसुल आ 'जम का कूआं

एक बार बग़दादे मुअल्ला में ताऊन की बीमारी फैल गई और लोग धड़ाधड़ मरने लगे । लोगों ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की खिदमत में इस मुसीबत से नजात दिलाने की दर-ख्वास्त पेश की । फ़रमाया : “हमारे मद्रसे के इर्द गिर्द जो घास है वोह खाओ और हमारे मद्रसे के कूएं का पानी पियो, जो ऐसा करेगा वोह إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ हर मरज़ से शिफ़ा पाएगा ।” चुनान्वे घास और कूएं के पानी से शिफ़ा मिलनी शुरूअ हो गई यहां तक कि बग़दाद शरीफ़ से ताऊन ऐसा भागा कि फिर कभी पलट कर न आया ।

(تَفْرِيعُ الْخَاطِرِ فِي مَنَاقِبِ الشَّيْخِ عَبْدِ الْقَادِرِ ص ٤٣)

“तबक़ाते कुब्रा” में गौसे आ'जम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَكْرَم का येह इर्शाद भी नक्ल किया गया है : “जिस मुसल्मान का मेरे मद्रसे से गुज़र हुवा क़ियामत के रोज़ उस के अज़ाब में तख़फ़ीफ़ होगी ।” (الطَّبَقَاتُ الْكُبْرَى لِلشُّعْرَانِي الْجُزءِ الْأَوَّلِ ص ١٧٩ دار الفکر بیروت) की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो ।

गुनाहों के अमराज़ की भी दवा दो

मुझे अब अता हो शिफ़ा गौसे आ 'जम

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

डूबी हुई बारात

एक बार सरकारे बग़दाद हुज़ूर सय्यिदुना गौसुल आ 'जम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَكْرَم दरिया की तरफ़ तशरीफ़ ले गए, वहां एक बुढ़िया को देखा

फ़रमावे मुखफ़ा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है। (मुरान)

जो ज़ारो क़ितार रो रही थी। एक मुरीद ने बारगाहे गौसिय्यत में अर्ज़ की : **या मुर्शिदी !** इस जर्ईफ़ का इक्लौता ख़ूब-रू बेटा था, बेचारी ने उस की शादी रचाई दूल्हा निकाह कर के दुल्हन को इसी दरिया में कश्ती के ज़रीए अपने घर ला रहा था कि कश्ती उलट गई और **दूल्हा दुल्हन समेत सारी बारात डूब गई**। इस वाक़िए को आज **बारह¹² बरस** गुज़र चुके हैं मगर मां का जिगर है, बेचारी का ग़म जाता नहीं है, येह रोज़ाना यहां दरिया पर आती और बारात को न पा कर रो धो कर चली जाती है। हुज़ूर गौसुल आ'ज़म **رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَمِ** को इस जर्ईफ़ (या'नी बुद्धिया) पर बड़ा तर्स आया, आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने **اَللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ** की बारगाह में दुआ के लिये हाथ उठा दिये, चन्द मिनट तक कुछ भी जुहूर न हुवा, बेताब हो कर बारगाहे इलाही में अर्ज़ की : **يا اَللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ !** इस क़दर ताख़ीर क्यूं ? इर्शाद हुवा : “ऐ मेरे प्यारे ! येह ताख़ीर ख़िलाफ़े तक्दीर व तदबीर नहीं है, हम चाहते तो एक हुक्मे कुन से तमाम ज़मीन व आस्मान पैदा कर देते मगर ब मुक्ताजाए हिकमत छ⁶ दिन में पैदा किये, बारात को डूबे **12 साल** बीत चुके हैं, अब न वोह कश्ती बाकी रही है न ही उस की कोई सुवारी, तमाम इन्सानों का गोश्त वगैरा भी दरियाई जानवर खा चुके हैं, रेजे रेजे को अज्जाए जिस्म में इकठ्ठा करवा कर दोबारा जिन्दगी के मरहले में दाख़िल कर दिया है, अब उन की आमद का वक़्त है” अभी येह कलाम इख़िताम को भी न पहुंचा था कि यकायक वोह कश्ती अपने तमाम तर साज़ो सामान के साथ मअ **दूल्हा दुल्हन व बराती सत्ते** आब पर नुमूदार हो गई और चन्द ही लम्हों में कनारे आ लगी, तमाम बाराती सरकारे बग़दाद **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** से दुआएं ले कर खुशी खुशी अपने घर पहुंचे। इस करामत को सुन कर बे शुमार कुफ़ार ने आ आ कर सय्यिदुना गौसे आ'ज़म **عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَمِ** के दस्ते हक़ परस्त पर इस्लाम क़बूल किया।

(سُلْطَانُ الْاِنْكَارِ فِي مَنَاقِبِ غَوْثِ الْاِبْرَارِ، لِسَاهِ مُحَمَّدِ بْنِ الْهَمْدَنِ)

फरमाते मुखफा : صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** (طبرانی) उस पर सो रहमतेँ नाज़िल फरमाता है।

निकाला है पहले तो डूबे हुआँ को
और अब डूबतों को बचा गौंसे आ 'जम

(जौंके ना'त)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
क्या बन्दा मुर्दा जिन्दा कर सकता है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बेशक मौत व हयात अल्लाह

के इख़्तियार में है लेकिन अल्लाह عزّ وَّجَلُّ अपने किसी बन्दे को मुर्दे जिलाने की ताक़त बख़्शे तो उस के लिये कोई मुश्किल बात नहीं है और अल्लाह عزّ وَّجَلُّ की अ़ता से किसी और को हम मुर्दा जिन्दा करने वाला तस्लीम करें तो इस से हमारे ईमान पर कोई असर नहीं पड़ता, अगर शैतान की बातों में आ कर किसी ने अपने जेहन में येह बिठा लिया कि अल्लाह عزّ وَّजَلُّ ने किसी और को मुर्दा जिन्दा करने की ताक़त ही नहीं दी तो उस का येह नज़रिया यकीनन हुक्मे कुरआनी के ख़िलाफ़ है देखिये कुरआने पाक हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह **عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** के मरीजों को शिफ़ा देने और मुर्दे जिन्दा करने की ताक़त का साफ़ साफ़ ए'लान कर रहा है। जैसा कि पारह 3 सूराए आले इमरान की आयत नम्बर 49 में हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह **عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** का येह इर्शाद नक्ल किया गया है :

وَأُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ
وَأُحْيِي الْمَوْتَى بِإِذْنِ اللَّهِ ع

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और मैं शिफ़ा देता हूं मादर ज़ाद अन्धों और सफ़ेद दाग़ वाले (या'नी कोढ़ी) को और मैं मुर्दे जिलाता हूं अल्लाह عزّ وَّजَلُّ के हुक्म से।

उम्मीद है कि शैतान का डाला हुवा वस्वसा जड़ से कट गया होगा, क्यूं कि मुसलमान का कुरआने पाक पर ईमान होता है और वोह हुक्मे कुरआने करीम के ख़िलाफ़ कोई दलील तस्लीम करता ही नहीं।

फरमाते मुखफा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्नूस तरीन शख्स है। (ज़िदिया)

बहर हाल **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ अपने मक्बूल बन्दों को तरह तरह के इख्तियारात से नवाज़ता है और ब अताए खुदा वन्दी उन से ऐसी बातें सादिर होती हैं जो अक्ले इन्सानी की बुलन्दियों से वराउल वरा होती हैं। यकीनन **अहलुल्लाह** के तसर्फ़ात व इख्तियारात की बुलन्दी को दुन्या वालों की परवाज़े अक्ल छू भी नहीं सकती।

साइन्स दान की नज़र

दौरे हाज़िर का सब से बड़ा साइन्स दान “आइन स्टाइन” कह गया है : “मैं ने रेडियो दूरबीन के ज़रीए एक ऐसा कहकशां तो देख लिया है जो ज़मीन से दो करोड़ नूरी साल दूर है या’नी रोशनी जो फ़ी सेकन्ड एक लाख छियासी हज़ार मील तै करती है, वहां दो करोड़ साल में पहुंचेगी मगर जहां तक काएनात की सरहदें मा’लूम करने का तअल्लुक है अगर मेरी उम्र एक मिल्यन या’नी दस लाख बरस भी हो जाए तब भी दरयाफ्त नहीं कर सकता।”

साइन्स दान के बर अक्स खुदाए रहमान عَزَّ وَجَلَّ के वली हुज़ूर ग़ौसे आ’ज़म عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم की नज़र की अ-ज़मत व शान देखिये ! आप फ़रमाते हैं :

نَظَرْتُ إِلَى بِلَادِ اللَّهِ جَمْعًا كَخَرْدَلَةٍ عَلَى حُكْمِ التَّصَالِ

(या’नी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के तमाम शहर मेरी नज़र में इस तरह हैं जैसे हथेली में राई का दाना)

मेरे आका आ’ला हज़रत عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى बारगाहे ग़ौसिय्यत मआब में अर्ज़ करते हैं :

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ

का है साया तुझ पर
बोल बाला है तेरा जिक्र है ऊंचा तेरा

(हदाइके बख़्शिश शरीफ)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

करमाने मुखफा على الله تعالى عليه واله وسلم : उस शख्स को नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े । (५)

बद अक्वीदा कातिल की सज़ा

अब विसाल शरीफ़ के त्वील अर्से के बा'द रन्जीत सिंघ के दौरे हुकूमत में हिन्दूस्तान में रूनुमा होने वाला एक ईमान अफ़ोज़ वाकिआ पहि़ये और झूमिये : एक नाम निहाद मुसल्मान जो करामाते औलिया का मुन्किर था, शूमई किस्मत से एक शादी शुदा हिन्दुवानी को दिल दे बैठा । एक बार हिन्दू अपनी बीवी को मयके पहुंचाने के लिये घर से बाहर निकला, उधर उस बद बख़्त आशिक़ पर शहवत ने ग़-लबा किया । चुनान्चे उस ने उन का पीछा किया और एक सुनसान मक़ाम पर दोनों को घेर लिया, वोह दोनों पैदल थे और येह घोड़े पर सुवार था, इस ने झूटमूट हमदर्दी का इज़हार करते हुए सुवारी की पेशकश की मगर हिन्दू ने इन्कार किया, वोह इस्सार करने लगा कि अच्छा औरत ही को पीछे बैठने की इजाज़त दे दो कि येह बेचारी थक जाएगी, हिन्दू को उस की निय्यत पर शुबा हो चला था लिहाज़ा उस ने कहा कि तुम ज़मानत दो कि किसी किस्म की ख़ियानत किये बिगैर मेरी बीवी को मन्ज़िल पर पहुंचा दोगे । उस ने कहा कि यहां जंगल में ज़ामिन कहां से लाऊं ? औरत बोल उठी : **मुसल्मान ग्यारहवीं वाले बड़े पीर साहिब** को बहुत मानते हैं, तुम उन्हीं की ज़मानत दे दो । वोह अगर्चे ग़ौसुल आ'ज़म **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيم** के तसर्फ़ात का काइल नहीं था मगर येह सोच कर कि हां कह देने में क्या जाता है, उस ने हां कह दी । जूं ही औरत घोड़े पर सुवार हुई, उस ज़ालिम ने तलवार से उस के शोहर की गरदन उड़ा दी और घोड़े को एड़ लगा दी, औरत ग़म से निढाल और सहमी हुई बार बार मुड़ कर पीछे देखे जा रही थी । उस ने कहा कि बार बार पीछे देखने से कुछ हासिल नहीं होगा, तुम्हारा शोहर अब वापस नहीं आ सकता । उस ने कप-कपाती हुई आवाज़ में कहा : मैं तो **बड़े पीर साहिब** को देख रही हूं । इस पर उस ने एक कहकहा लगा कर कहा कि बड़े पीर साहिब को तो फ़ौत हुए कई साल गुज़र चुके हैं, अब भला वोह कहां से आ सकते हैं ! इतना कहना था कि

फ़रमाने मुखफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (ब्राह्मण)

अचानक दो² बुजुर्ग नुमूदार हुए उन में से एक ने बढ़ कर तलवार से उस बंद अक़ीदा आशिक़ का सर उड़ा दिया फिर औरत को मअ़ घोड़े के उस जगह लाए जहां वोह हिन्दू कटा हुवा पड़ा था, दोनों में से एक बुजुर्ग ने कटा हुवा सर धड़ से मिला कर कहा : “**فَمُ يَأْذِنُ اللّٰهُ**” या'नी उठ अल्लाह **عَزَّ وَجَلَّ** के हुक्म से। वोह हिन्दू उसी वक़्त ज़िन्दा हो गया। वोह दोनों² बुजुर्ग ग़ाइब हो गए। येह दोनों मियां बीवी मक़तूल के घोड़े पर सुवार हो कर घर लौट आए। मक़तूल के वारिसों ने घोड़ा पहचान कर रन्जीत सिंघ के कोर्ट में दोनों मियां बीवी पर केस कर दिया कि हमारा आदमी ग़ाइब है और घोड़ा इन के पास है, शायद इन लोगों ने हमारे आदमी को क़त्ल कर दिया है। पेशी हुई, उन मियां बीवी ने जंगल का सारा वाक़िआ कह सुनाया और कहा कि उन दोनों बुजुर्गों में से एक बुजुर्ग यहां के **मशहूर मज्ज़ूब गुल मुहम्मद शाह साहिब** के हम-शक़ल थे। चुनान्वे उन मज्ज़ूब बुजुर्ग को बुलवाया गया, वोह तशरीफ़ ले आए और उन्हीं ने आते ही अक्वल ता आख़िर सारा वाक़िआ लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ बयान कर दिया। लोग **हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم** की येह ज़िन्दा करामत सुन कर अश अश कर उठे। रन्जीत सिंघ ने मुक़द्दमा ख़ारिज करते हुए उन दोनों² मियां बीवी को इन्आमो इक्राम दे कर रुख़सत किया।

(*المخالفين في الحرائق ص १९*)

अल अमां क़हर है ऐ ग़ौस वोह तीखा तेरा

मर के भी चैन से सोता नहीं मारा तेरा

(हदाइके बख़्शाश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

70 बार एह्तिलाम

हुज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم का एक मुरीद एक ही रात में नई नई औरतों के सबब सत्तर⁷⁰ बार मुह्तलिम हुवा। सुब्ह गुस्ल से फ़ारिग़ हो कर अपनी परेशानी की फ़रियाद ले कर अपने मुर्शिदे

फ़रमावे मुस्ताफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझे पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो **اللَّهُمَّ** عزّ وجلّ तुम पर रहमत भेजेगा। (अबुनूर)।

करीम हुजूरे ग़ौसे आ'ज़म **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم** की ख़िदमते बा अ-ज़मत में हाज़िर हुवा। क़ब्ल इस के कि वोह कुछ अर्ज़ करे, सरकारे बग़दाद हुजूरे ग़ौसे आ'ज़म **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم** ने खुद ही फ़रमाया : रात के वाकिए से मत घबराओ, मैं ने रात लौहे महफूज़ पर नज़र डाली तो तुम्हारे बारे में सत्तर⁷⁰ मुख़्तलिफ़ औरतों के साथ जिना करना मुक़द्दर था, मैं ने बारगाहे इलाही **عَزَّوَجَلَّ** में इल्तिजा की, कि वोह तेरी तक्दीर को बदल दे और इन गुनाहों से तेरी हिफ़ाज़त फ़रमाए। चुनान्वे उन सारे वाकिआत को ख़्वाब में एहतिलाम की सूत में तब्दील कर दिया गया।

(بَهْجَةُ الاسرار ص 193)

तेरे हाथ में हाथ मैं ने दिया है

तेरे हाथ है लाज या ग़ौसे आ'ज़म

(जौके ना'त)

इर्शादाते ग़ौसे आ'ज़म **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस से मा'लूम हुवा कि किसी पीरे कामिल की बैअत ज़रूर करनी चाहिये कि पीर की तवज्जोह से मुसीबतें टल जाती हैं और बा'ज़ अवकात बड़ी आफ़त छोटी आफ़त से बदल कर रह जाती है। “**बहजतुल असरार शरीफ़**” में है, पीरों के पीर, पीर दस्त गीर, रोशन ज़मीर, कुत्बे रब्बानी, महबूबे सुब्हानी, पीरे लासानी, किन्दीले नूरानी, शहबाजे ला मकानी, **अशशौख़ अबू मुहम्मद सय्यिद अब्दुल क़ादिर जीलानी** قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي का फ़रमाने बिशारत निशान है : मुझे एक बहुत बड़ा रजिस्टर दिया गया जिस में मेरे मुसाहिबों और मेरे क़ियामत तक होने वाले मुरीदों के नाम दर्ज थे और कहा गया कि येह सारे अफ़ाद तुम्हारे हवाले कर दिये गए हैं। फ़रमाते हैं, मैं ने दारोग़ए जहन्नुम से इस्तिफ़सार किया : क्या जहन्नुम में मेरा कोई मुरीद भी है ? उन्होंने ने जवाब दिया : “नहीं।” आप **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** ने मज़ीद फ़रमाया : मुझे अपने परवर दगार की इज़्ज़त व जलाल की क़सम ! मेरा दस्ते

फरमाने मुखफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है। (बाय़्ना)

हिमायत मेरे मुरीद पर इस तरह है जिस तरह आस्मान ज़मीन पर साया कुनां है। अगर मेरा मुरीद अच्छा न भी हो तो क्या हुवा اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ मैं तो अच्छा हूं। मुझे अपने पालने वाले की इज़्ज़त व जलाल की क़सम ! मैं उस वक़्त तक अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से न हटूंगा जब तक अपने एक एक मुरीद को दाख़िले जन्नत न करवा लूं। (बाय़्ना)

मुरीदों को ख़तरा नहीं बहरे ग़म से
कि बेड़े के हैं नाख़ुदा ग़ौसे आ'ज़म

(ज़ौके ना'त)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
अज़ीमुश्शान करामत

अबुल मुज़फ़्फ़र हसन नामी एक ताजिर ने हज़रते सय्यिदुना शैख़ हम्माद رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَادِ की बारगाह में हाज़िर हो कर अर्ज़ की : हुज़ूर ! मैं तिजारत के लिये काफ़िले के हमराह मुल्के शाम जा रहा हूं, आप से दुआ की दर-ख़्वास्त है। सय्यिदुना शैख़ हम्माद رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَادِ ने फ़रमाया : “आप अपना सफ़र मुलतवी कर दीजिये, अगर गए तो डाकू सारा माल भी लूट लेंगे और आप को क़त्ल भी कर डालेंगे।” ताजिर येह सुन कर बड़ा घबराया, इसी परेशानी के अ़लम में वापस आ रहा था कि रास्ते में हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَكْرَم मिल गए, पूछा क्यूं परेशान हैं ? उस ने सारा वाक़िआ कह सुनाया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इर्शाद फ़रमाया : परेशान न हों शौक़ से मुल्के शाम का सफ़र कीजिये, इर्शाद फ़रमाया : परेशान न हों शौक़ से मुल्के शाम का सफ़र कीजिये, إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ सब बेहतर हो जाएगा। चुनान्वे वोह काफ़िले के साथ रवाना हो गया, उसे कारोबार में बहुत नफ़अ हुवा, वोह एक हज़ार¹⁰⁰⁰ अशरफ़ियों की थेली लिये मुल्के शाम के शहर “हलब” पहुंचा। इत्तिफ़ाक़न वोह अशरफ़ियों की थेली कहीं रख कर भूल गया, इसी फ़िक्क़ में नींद ने ग़-लबा किया और सो गया। उस ने एक डरावना ख़्वाब देखा कि डाकूओं ने

फ़रमावे मुखफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ता है **अल्लाह** (عز وجل) उस के लिये एक कीरात अन्न लिखता और कीरात उहुद पहाड़ जितना है।

काफ़िले पर हम्ला कर के सारा माल लूट लिया है और इसे भी क़त्ल कर डाला है ! ख़ौफ़ के मारे उस की आंख खुल गई, घबरा कर उठा तो वहां कोई डाकू वगैरा न था। अब उसे याद आया कि अशरफ़ियों की थेली उस ने फुलां जगह रखी है, झट वहां पहुंचा तो थेली मिल गई। खुशी खुशी बग़दाद शरीफ़ वापस आया। अब सोचने लगा कि पहले गौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم से मिलूं या शैख़ हम्माद رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد से ! इत्तिफ़ाक़न रास्ते में ही सय्यिदुना **शैख़ हम्माद** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد मिल गए और देखते ही फ़रमाने लगे : “पहले जा कर गौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم से मिलो कि वोह महबूबे रब्बानी हैं, उन्होंने ने तुम्हारे हक़ में **17 बार दुआ** मांगी थी तब कहीं जा कर तुम्हारी तक्दीर बदली जिस की मैं ने ख़बर दी थी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे साथ होने वाले वाक़िए को **गौसे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की दुआ की ब-र-कत से बेदारी से ख़्वाब में मुन्तक़िल कर दिया।” चुनान्चे वोह बारगाहे गौसिय्यत मआब में हाज़िर हुआ। गौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने देखते ही फ़रमाया : “वाकेई मैं ने तुम्हारे लिये **17 मर्तबा दुआ** मांगी थी।” (بَهْجَةُ الْاَسْرَارِ ص ٦٤) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सद्के हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो।

गरज आका से करूं अर्ज कि तेरी है पनाह

बन्दा मजबूर है खातिर पे है क़ब्ज़ा तेरा

(हदाइके बख़्शाश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अज़ाबे क़ब्र से रिहाई

एक ग़मगीन नौ जवान ने आ कर बारगाहे गौसिय्यत में फ़रियाद की : हुज़ूर ! मैं ने अपने वालिदे मर्हूम को रात ख़्वाब में देखा, वोह कह रहे थे : “बेटा ! मैं अज़ाबे क़ब्र में मुब्तला हूं, तू सय्यिदुना शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी قُدَسَ سِرُّهُ النَّوْرَانِي की बारगाह में हाज़िर हो कर मेरे लिये दुआ

फ़रमावे मुखफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे। (ज़रान)

की दर-ख़्वास्त कर।” यह सुन कर सरकारे बग़दाद हुजुरे ग़ौसे आ’ज़म **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : क्या तुम्हारे अब्बाजान मेरे मद्रसे से कभी गुज़रे हैं ? उस ने अर्ज़ की : जी हां। बस आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ख़ामोश हो गए। वोह नौ जवान चला गया। दूसरे रोज़ खुश खुश हाज़िरे ख़िदमत हुवा और कहने लगा : **या मुर्शिद !** आज रात वालिदे मर्हूम सब्ज़ हुल्ला (या’नी सब्ज़ लिबास) ज़ैबे तन किये ख़्वाब में तशरीफ़ लाए, वोह बेहद खुश थे, कह रहे थे : “बेटा ! सय्यिदुना शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी **فَدَيْسُ سَيِّدُ الرِّبَّانِي** की ब-र-कत से मुझ से अज़ाब दूर कर दिया गया है और यह सब्ज़ हुल्ला भी मिला है। मेरे प्यारे बेटे ! तू इन की ख़िदमत में रहा कर।” यह सुन कर आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने फ़रमाया : मेरे रब **عَزَّوَجَلَّ** ने मुझ से वा’दा फ़रमाया है कि जो मुसलमान तेरे मद्रसे से गुज़रेगा उस के अज़ाब में तख़्फ़ीफ़ (या’नी कमी) की जाएगी। (بَهْجَةُ الاسرار ص 194)

नज़्ज़ में, गोर में, मीज़ां पे सरे पुल पे कहीं

न छुटे हाथ से दामाने मुअल्ला तेरा

(हदाइके बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
मुर्दे की चीखो पुकार

एक मर्तबा बारगाहे ग़ौसिय्यत मआब में हाज़िर हो कर लोगों ने अर्ज़ की : अलीजाह ! “बाबुल अज़ज” के क़ब्रिस्तान में एक क़ब्र से मुर्दे के चीखने की आवाज़ें आ रही हैं। हुज़ूर ! कुछ करम फ़रमा दीजिये कि बेचारे का अज़ाब दूर हो जाए। आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने इर्शाद फ़रमाया : क्या उस ने मुझ से ख़िर्क़ए ख़िलाफ़त पहना है ? लोगों ने अर्ज़ की : हमें मा’लूम नहीं। फ़रमाया : क्या कभी वोह मेरी मजलिस में हाज़िर हुवा ? लोगों ने ला इल्मी का इज़हार किया। फ़रमाया : क्या उस ने कभी मेरा खाना खाया ? लोगों ने फिर ला इल्मी का इज़हार किया। आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ**

फ़रमाने मुस्ताफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुद पाक पढ़ा **अल्लाह** (स्)। उस पर दस रहमतें भेजता है।

ने पूछा : क्या उस ने कभी मेरे पीछे नमाज़ अदा की ? लोगों ने वोही जवाब दिया। आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने ज़रा सा सरे अक्दस झुकाया तो आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** पर जलाल व वकार के आसार ज़ाहिर हुए। कुछ देर के बा'द फ़रमाया : मुझे अभी अभी फ़िरिश्तों ने बताया : “उस ने आप की ज़ियारत की है और उसे आप से अक़ीदत भी थी लिहाज़ा **अल्लाह** तबा-र-क व तआला ने उस पर रहूम किया।” **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** उस की क़ब्र से आवाज़ें आनी बन्द हो गईं। (194) **تَهْجَةُ الاسرار للشطنوفى ص**

बद सही, चोर सही, मुजरिमो नाकारा सही

ऐ वोह कैसा ही सही है तो करीमा तेरा

(हदाइके बख़्शिश शरीफ)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

तालिबे ग़मे मदीना व

बकीअ व मग़फ़रत व

बे हिसाब जन्नतुल

फ़िरदौस में आका

का पड़ोस



18 रबीउन्नूर शरीफ 1427 सि.हि.

17-4-2006

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक्रीबात, इज्तिमाआत, आ'रास और जुलूसे मीलाद वगैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाएअ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुशतमिल पेम्फ़लेट तक्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।